

# स्वामी मुक्तानन्द के वचनों पर ध्यान

## ईस्टर के उपलक्ष्य में सिद्धयोग सत्संग

### ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

#### परमात्मा का मन्दिर

‘चित्शक्ति विलास’ में, बाबा मुक्तानन्द जो कहानी सुनाते हैं, उसमें महात्मा जी अपना अन्त समय निकट आने पर, अपने श्रीगुरु को, सब दिशाओं, पंचमहाभूतों सहित अपने आस-पास सभी लोगों व सभी वस्तुओं को धन्यवाद देते हैं। बाबा जी बताते हैं कि अन्त में महात्मा जी ने “जो शरीर परमात्मा का चलता-फिरता-बोलता मन्दिर है, . . . उस शरीर को धन्यवाद दिया, उसका सम्मान किया।”<sup>१</sup>

शरीर परमात्मा का मन्दिर है, परमात्मा को स्वयं अपने अन्दर पाया जा सकता है—इस अवधारणा का उल्लेख अनेक धार्मिक व आध्यात्मिक परम्पराओं में किया गया है। उदाहरण के लिए, ईसाई बाइबिल में लिखा हुआ यह वाक्य प्रसिद्ध है, “देखो, परमेश्वर का साम्राज्य तुम्हारे अन्दर है।”<sup>२</sup> कुरान में अल्लाह द्वारा इंसान को पहले मिट्टी से बनाने और फिर उसमें अपनी रूह फूँक देने का वर्णन है।<sup>३</sup> और अपने प्रवचनों में व भक्तजनों से वार्तालाप करते समय, बाबा जी को जिन भारतीय शास्त्रों से उद्धरण देना प्रिय था, उनमें यही सिखावनी अलग-अलग रूपों में मिलती है। महान सन्त-कवि ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता पर लिखी गई टीका, ‘ज्ञानेश्वरी’ की इस ओवी पर गौर करें। भगवान श्रीकृष्ण के दृष्टिकोण से लिखते हुए ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं, “इसमें कोई संशय नहीं है कि मैं सकल रूपाकारों में विद्यमान हूँ और सब कुछ मुझमें अवस्थित है।”<sup>४</sup>

तो कुछ हद तक यह एक जाना-माना सत्य है। हमारे शरीर में परमात्मा का वास है। अब प्रश्न यह है : हम इस सत्य का तालमेल इस शरीर में रहने के अपने दैनिक अनुभव के साथ किस प्रकार बिठाएँ? मुझे याद है कि बचपन में मैं इस बात को लेकर बहुत उलझन में रहती थी। यह उस समय की बात है जब मुझे सिद्धयोग की सिखावनियों की सही मायने में बौद्धिक समझ नहीं थी; यह उस समय से भी पहले की बात है जब मैं अपनी इस बेचैनी को शब्दों में ठीक तरह से व्यक्त भी नहीं कर पाती थी। मैं टकटकी

लगाए खिड़की के बाहर देखती रहती, कभी-कभी तो घण्टों तक यह सोचते हुए बैठी रहती कि आखिर लोग मुझे मेरे नाम से क्यों बुलाते हैं। उन्हें ऐसा क्यों लगता था कि यह नाम, और यह चेहरा, और यह शरीर मैं हूँ। मुझे अच्छी तरह यह पता था कि मेरे अन्दर कोई 'मैं' है, और वह 'मैं' मुझे उस तमाम बाहरी सजावट से अधिक 'सच्ची' लगती थी, जिन पर लोग इतने ज़्यादा अटके हुए लगते थे।

यह बात मुझे समझ में नहीं आती थी, तब तक तो बिलकुल नहीं आई जब तक वर्षों बाद मैंने पूरी लगन और गम्भीरता से गुरुमाई जी और बाबा जी की सिखावनियों का अध्ययन करना शुरू नहीं कर दिया। मुझे लगता है, यही कारण है कि बाबा जी की विशेष सिखावनी, "आपका राम, आपमें आप होकर रहता है" मुझे इतनी उद्बोधक लगती है—और ख़ास तौर पर ये दो शब्द, "आप होकर।" यह सिखावनी उस प्रश्न का समाधान करती है जो बचपन से मेरे मन में था; यह मेरी उस पुरानी बेचैनी को दूर करती है। जिस 'मैं' को मैं बहुत आतुरता से चाहती थी कि लोग देखें, वह उस 'मैं' से भिन्न थी ही नहीं जिसे वे देख सकते थे। [बाबा जी की इस सिखावनी के बारे में और अधिक जानने के लिए और इसका क्या अर्थ है, यह समझने के लिए, मेरा सुझाव है कि आप इस विषय पर स्वामी ईश्वरानन्द जी की उत्कृष्ट व्याख्या पढ़ें। लिंक : <https://www.siddhayoga.org/teachings/2020/be-in-the-temple2/pursue-self-knowledge/> ]

जो छवि बाबा जी यहाँ देते हैं, विशेषकर यह कि शरीर एक 'मन्दिर' है, मुझे सबसे उद्बोधक लगती है। जब मैं 'मन्दिर' में होने के बारे में सोचती हूँ, प्रत्यक्ष रूप से दिव्यता के सान्निध्य में होने की जो अनुभूति मुझे होती है, वह उसी क्षण से होने लगती है, जैसे ही मैं मन्दिर की चौखट के अन्दर क़दम रखती हूँ। कभी-कभी यह अनुभूति उससे भी पहले होने लगती है, जब मैं बाहर से मन्दिर की वास्तुकला को देखती हूँ—जब मैं आकाश की ओर उठ रहे उसके कलश को देखती हूँ। हाँ, जैसे-जैसे मैं मन्दिर के अन्दर प्रवेश करती जाती हूँ, जैसे-जैसे मैं मन्दिर के 'गर्भगृह' के और भी समीप पहुँचती हूँ, हो सकता है कि परमात्मा के सान्निध्य में होने की मेरी अनुभूति और भी अधिक गहरी होती जाए। परन्तु इससे पहले जो कुछ होता है, वह भी इस अनुभूति का ही भाग है; यह इस बात को प्रभावित करता है कि मैं किस भाव से उन देवता की ओर बढ़ रही हूँ, उनके विषय में मेरी समझ क्या है, और मैं उनके प्रति अपना आदरभाव किस प्रकार व्यक्त कर रही हूँ। इस दृष्टि से देखें तो मन्दिर में होना और परमात्मा के सान्निध्य में होना, इन दोनों को एक-दूसरे से भिन्न नहीं समझा जा सकता।

इसी सन्दर्भ में, मैं यह पूछना चाहती हूँ : आप कौन-से कदम उठा सकते हैं [या उठाते हैं] ताकि आप यह याद रख सकें कि आपका शरीर ईश्वर की अभिव्यक्ति है? क्या आपने वसन्त के उमंगोत्साह को अपने श्वास में भरने के लिए समय निकाला है और उसमें जो वायदा व सम्भावना निहित है, क्या उसे आपने अपनी दृष्टि पर छा जाने दिया है?



© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

<sup>१</sup> स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास : एक आध्यात्मिक आत्मकथा* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२२] पृ. २५२।

<sup>२</sup> लूका [लूक] १७ : २१।

<sup>३</sup> देखें, उदाहरणार्थ, कुरान १५:२८-२९, कुरान ३२:९, और कुरान ३८:७१-७२।

<sup>४</sup> ज्ञानेश्वरी, अध्याय ६, ओवी ३९०; स्वामी कृपानन्द द्वारा लिखित *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY प्रेस, १९९९], पृ ८२।